अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान वर्ष : 2019 **दिनांक : 20-12-2019**

समय : 3 घंटा **तृतीय वर्ष-द्वितीय प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

पुण्य-पाप–50

प्र. 1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर एक दो लाईन में लिखें– 16

पुण्य–किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) शुभ नाम कर्म किसे कहते हैं?

(ख) पुण्य की अनंत पर्याय कैसे हैं?

(ग) निदान किस ध्यान का कौन सा भेद है? तथा निदान का क्या फल होता है?

(घ) स्वाध्याय का पांचवां प्रकार कौन सा है? उत्तराध्ययन सूत्र में इसका क्या अर्थ है?

(ङ) क्षण-लव-संवेग से आप क्या समझते हैं?

(च) पुण्य कर्म की सर्वमान्य प्रकृतियां कितनी व कौन सी हैं।

पाप–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें–

(छ) अनादेय नाम किसे कहते हैं?

(ज) ठाणं सूत्र के दूसरे स्थान में अंतराय कर्म के दो भेद कौन से बताए हैं? संक्षिप्त व्याख्या करें।

(झ) दर्शनावरणीय कर्म में कौन से कर्म देशघाती व कौन से कर्म सर्वघाती कोटि के हैं?

(ञ) तत्वार्थ सूत्र में दर्शन मोहनीय कर्म बंध के कौन-कौन से हेतु हैं?

प्र. 2 निम्न प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित लिखें– 10

(क) **पुण्य**–कल्याणकारी तथा अकल्याणकारी कर्मों के बंध के हेतुओं का उल्लेख करें। ***अथवा*** पुण्य जनित काम भोगों के सम्बन्ध में दो दृष्टियां कौन-कौन सी हैं?

(ख) **पाप**–जीव ग्रहण काल के समय ही शुभाशुभ का विभाग कर कर्म ग्रहण करता है। इसे उदाहरण से समझाऐं। ***अथवा*** घाति व अघाति कर्म पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

प्र. 3 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार पूर्वक दीजिए– 24

(क) **पुण्य**–पौद्गलिक सुख और आत्मिक सुख में क्या अंतर है? ***अथवा*** पुण्य के नौ बोल अपेक्षा सहित हैं या अपेक्षा रहित हैं।

(ख) **पाप**–नौ कषाय की नौ प्रकृतियों को समझाऐं। ***अथवा*** अशुभ नाम कर्म का वर्णन 23वें नाम के भेद तक करें।

अवबोध (निर्जरा से देवगति तक)–30

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दें– 6

(क) बंध को बाधक क्यों माना गया है?

(ख) क्या केवली समुद्घात में मोक्ष हो सकता है?

(ग) किस योनि से निकलकर बने मनुष्य सबसे कम सिद्ध हो सकते हैं?

(घ) मोक्ष कहां है?

(ङ) एक साथ 108 सिद्ध होने के बाद कितने समय तक 108 सिद्ध नहीं हो सकते?

(च) क्या बंधी हुई कर्म वर्गणा का परोक्षज्ञानी ज्ञान या अनुभव कर सकते हैं?

(छ) चौदहवें गुणस्थान में कौन सी निर्जरा मानी गई है?

(ज) व्यंतर देवों के जो चिन्ह लक्षण आए हैं वे अलग-अलग जाति के वृक्ष हैं। उनका क्रम व चिन्ह लिखें।

(झ) पहले निर्जरा होती है या पुण्य का बंध?

प्र. 5 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर दो तीन वाक्य में दें– 12

(क) उपशम भाव निर्जरा में सहयोगी कैसे बनता है?

(ख) कर्म के कर्म लगता है या आत्मा के कर्म लगता है?

(ग) कर्म बंध के समय प्रदेश बंध आदि चारों का होता है, या तीन दो एक का हो सकता है?

(घ) सिद्धों के साथ रहने वाले एकेन्द्रिय जीवों को भी क्या मोक्ष सुख की अनुभूति होती है?

(ङ) देवताओं का आहार कौन सा होता है?

(च) सिद्ध क्या करते हैं?

(छ) मुक्तात्माएं कहां रहती हैं?

(ज) क्या सिद्धों की पर्याय भी बदलती है?

प्र. 6 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित लिखें– 12

(क) क्या देव योनि में नींद और वेदनीय का भी विपाकोदय होता है? तथा देवलोक से देव च्युत (मर कर) होकर कहां-कहां जाते हैं?

(ख) तीन लोक (उर्ध्व, अधो और मध्य) में कहां से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है?

(ग) क्षयोपशम में छत्तीस गुण निर्जरा जन्य हैं, क्या क्षायक व उपशम के गुण भी निर्जरा जन्य हैं?

(घ) सिद्धों की कोई अवगाहना भी है? सर्वोत्कृष्ट अवगाहना तथा सबसे छोटी अवगाहना के एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

(ङ) क्या निर्जरा से मात्र अशुभ कर्म ही टूटते हैं? निर्जरा तो आठों कर्मों की होती है, फिर वर्णन केवल चार घातिक कर्मों की निर्जरा से प्राप्त गुणों का ही क्यों आता है?

गीतिका (दस-दान, अठारह-पाप)–20

प्र. 7 कोई चार प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दें– 4

(क) जो पूर्णरूप से फलवान बनती है, वह निर्मल करणी कौन सी है?

(ख) किसको तत्त्व की समझ जल्दी आ जाती है?

(ग) कौन से व्यक्तियों ने मूला आदि (जमीकंद) पदार्थों के दान को मिश्र धर्म बताया है?

(घ) नवें व दसवें दान के ज्ञानी क्या बताते हैं? वे किसकी तरह हैं?

(ङ) कारूण्य दान किसे कहते हैं?

प्र. 8 कोई चार पद्य अर्थ सहित लिखें। (प्रत्येक वर्ग में से दो पद्य करें)– 16

दस-दान–

(क) ए दान.....मिथ्यात ए।।

(ख) छोड़ावै.....बार ए।।

(ग) लेणात ने.....नाम ए।।

अठारह-पाप–

(क) इविरत सूं.....पारिखा ए।।

(ख) आय मिलै.....कही ए।।

(ग) दाता ने.....उतारसी ए।।